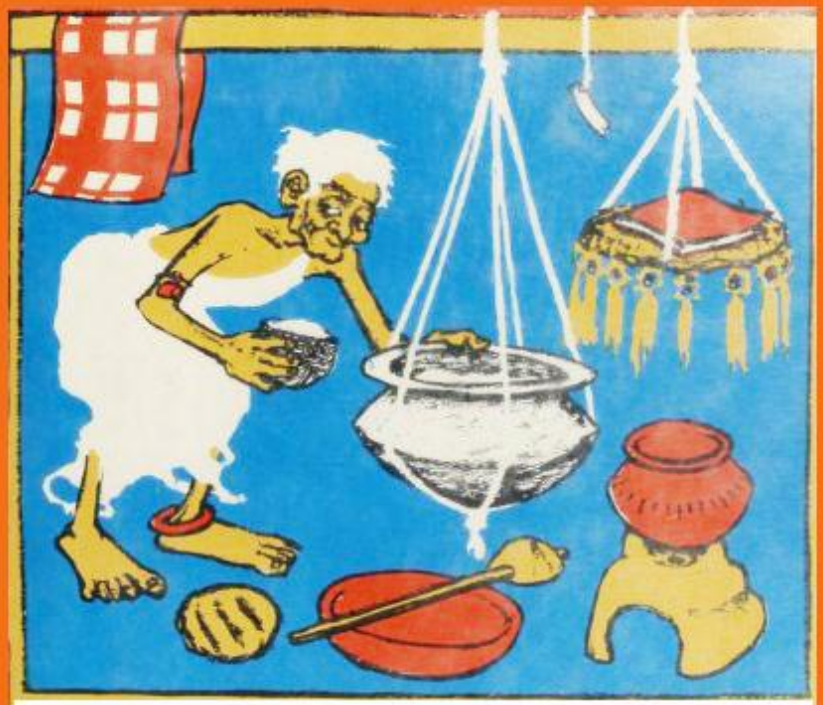

बूढ़ी औरत

और चावल चोर

"हर रात कोई चोर मेरा चावल चुराता है," बूढ़ी औरत ने कहा. और फिर वो राजा से मदद लेने गई. राजा शिकार के लिए बाहर गया था, लेकिन सौभाग्य से उसे रास्ते में कुछ बहुत ही चतुर दोस्त मिले.

एक बिच्छू-मछली, एक बेल का फल, गोबर, एक उस्तरे और एक मगरमच्छ की मदद से, बूढ़ी महिला चोर को पकड़ने में सफल रही. अब वो जितना चाहे उतना चावल खा सकती थी.

बूढ़ी औरत और चावल चोर

एक बूढ़ी औरत थी जिसे चावल पसंद था. हर सुबह वो आधे चावल ठंडे पानी के बर्तन में भिगोती थी जिससे वो उन्हें उबाल सके. बाकी आधे हिस्से का वो मुरमुरा बनाती थी और फिर गर्म रखने के लिए उसे तवे पर रख देती थी. इस तरह वो हमेशा भगोने में ठंडा उबला चावल, और तवे पर गर्म मुरमुरा रखती थी.

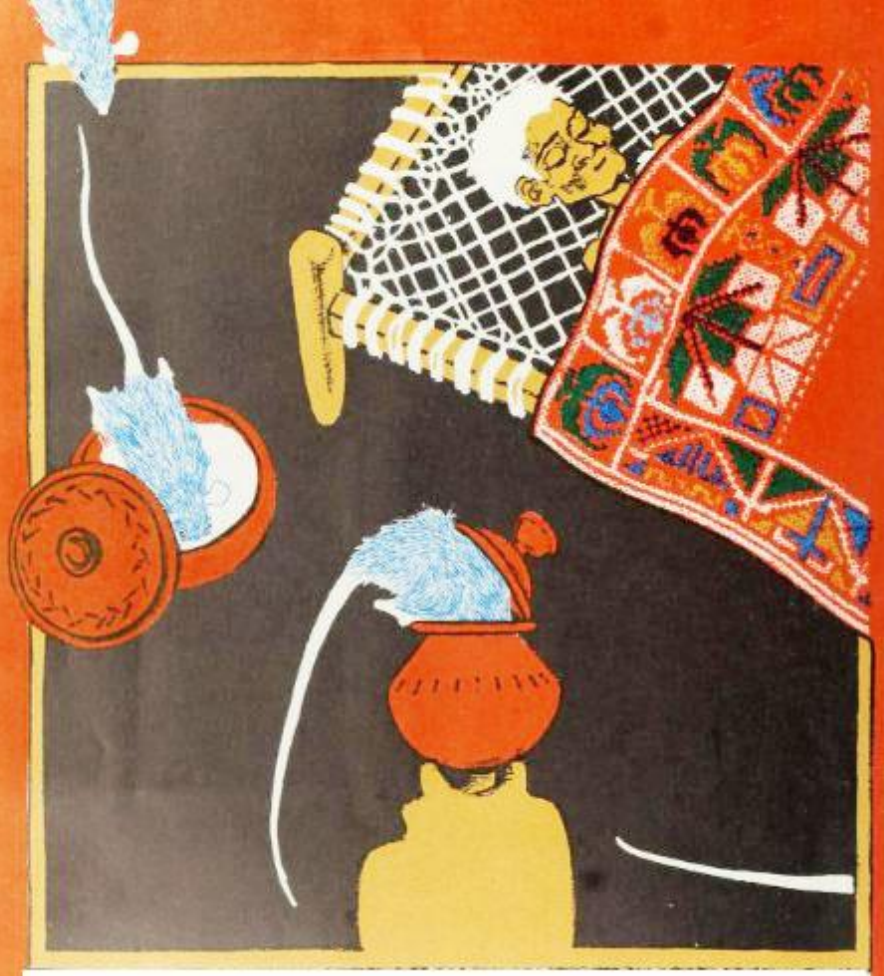

बूढ़ी औरत काफी खुश और संतुष्ट थी. फिर एक चोर आया.
वह हर रात आता और भगोने में से कुछ ठंडा उबला चावल
और तवे से कुछ मुरमुरा चुराकर ले जाता था.

परेशान होकर बुढ़िया ने अपनी चलने वाली छड़ी उठाई
और वो राजा से शिकायत करने के लिए निकल पड़ी.

जल्द ही वह एक तालाब के किनारे आ पहुंची. तालाब में एक बिच्छू-मछली थी जिसने उससे पूछा, "बुढ़िया, तुम कहाँ जा रही हो?"

"हर रात एक चोर मेरा चावल चुराता है. मैं राजा से शिकायत करने जा रही हूं."

बिच्छू-मछली ने कहा, "वापिस लौटते समय तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊंगी."

"अच्छा!" बुढ़िया ने कहा.

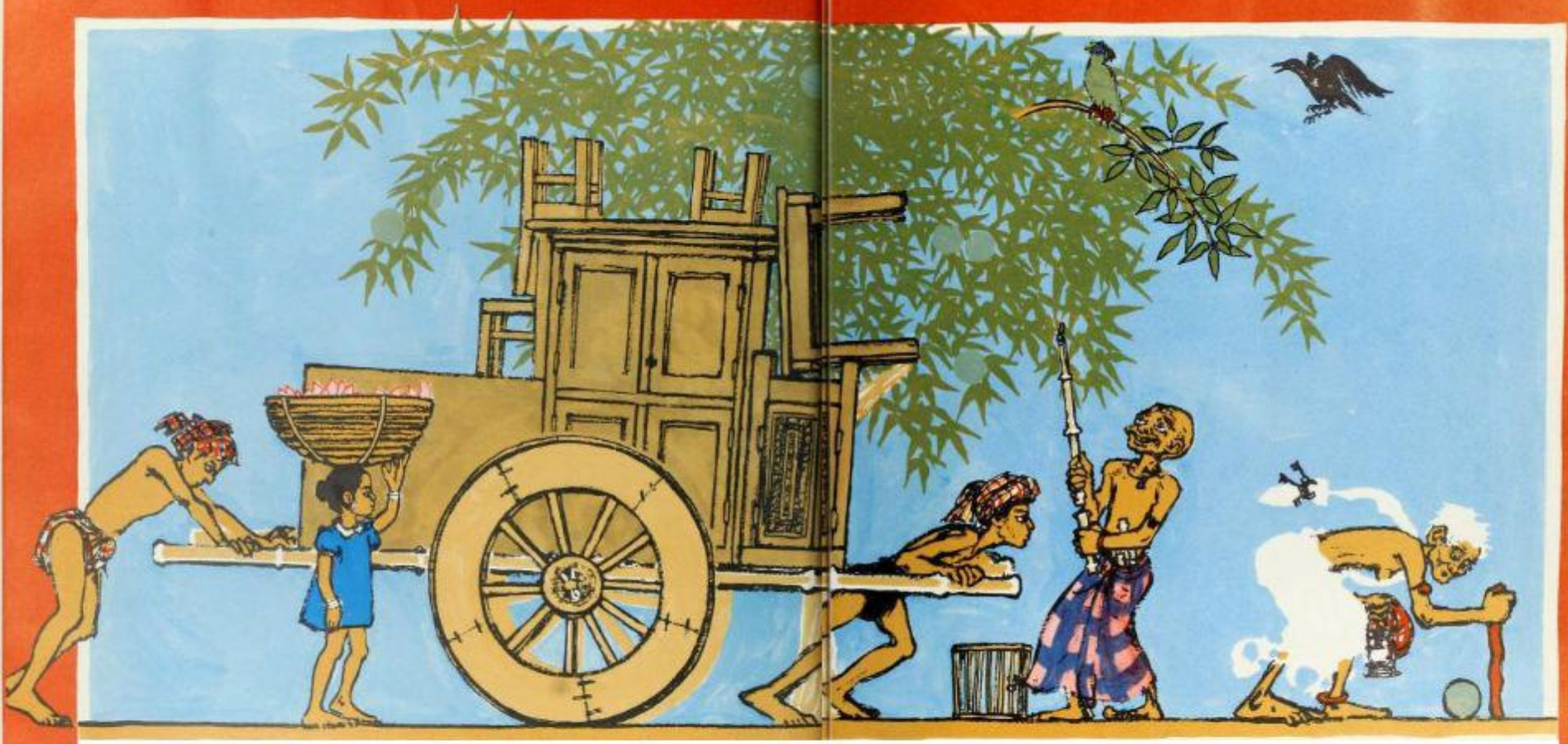

वो सड़क के किनारे-किनारे चलती गई. फिर वो एक बेल के पेड़ के पास आई. एक बेल जमीन पर गिरा पड़ा था और उसने पूछा, "बुढ़िया, तुम कहाँ जा रही हो?" "हर रात एक चोर मेरा चावल चुराता है, इसलिए मैं राजा से शिकायत करने जा रही हूं."

बेल ने कहा, "वापिस लौटते समय तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊंगा.“ "अच्छा!" बुढ़िया ने कहा.

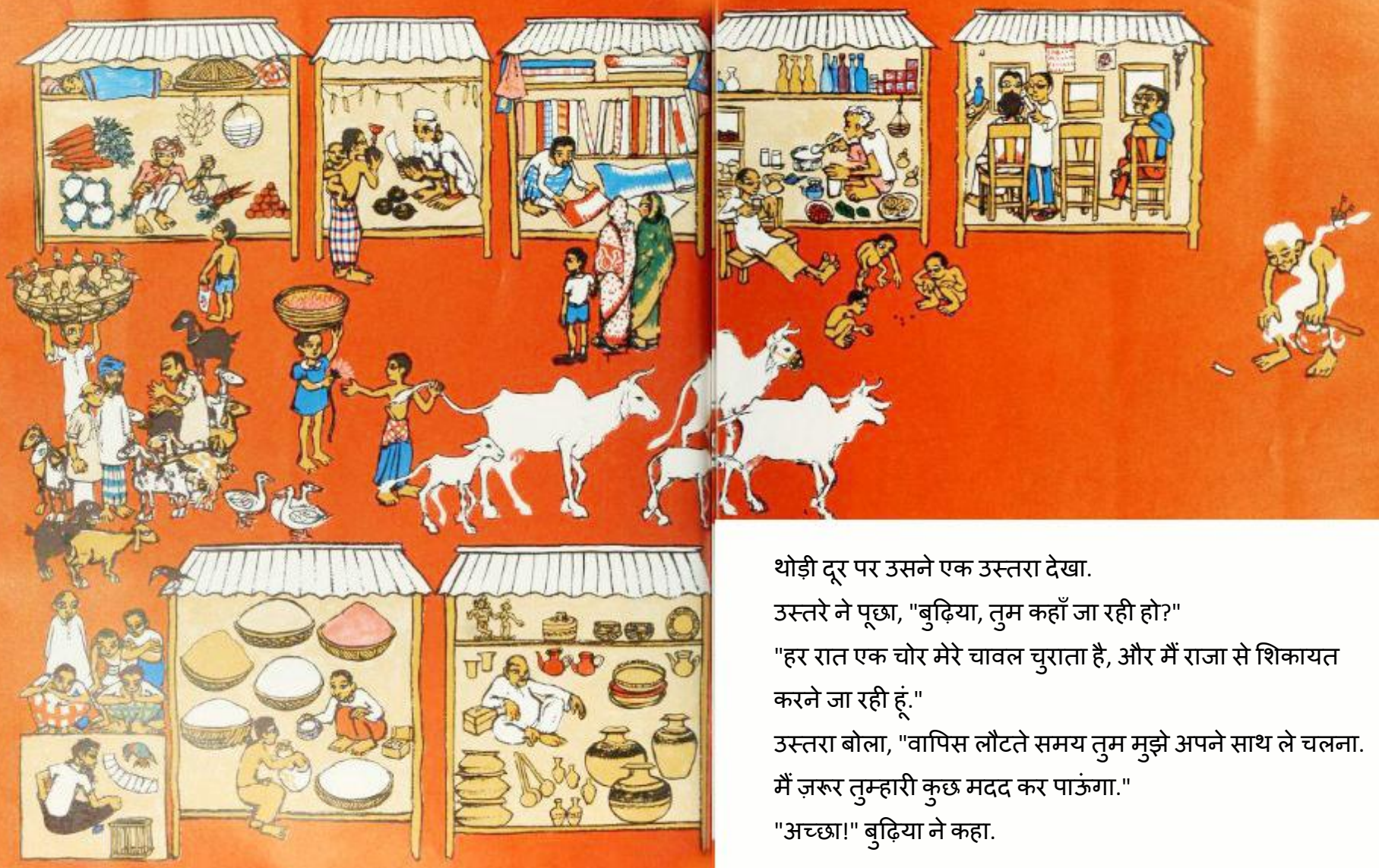

थोड़ी दूर पर उसने एक उस्तरा देखा.

उस्तरे ने पूछा, "बुढ़िया, तुम कहाँ जा रही हो?"

"हर रात एक चोर मेरे चावल चुराता है, और मैं राजा से शिकायत करने जा रही हूं."

उस्तरा बोला, "वापिस लौटते समय तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊंगा."

"अच्छा!" बुढ़िया ने कहा.

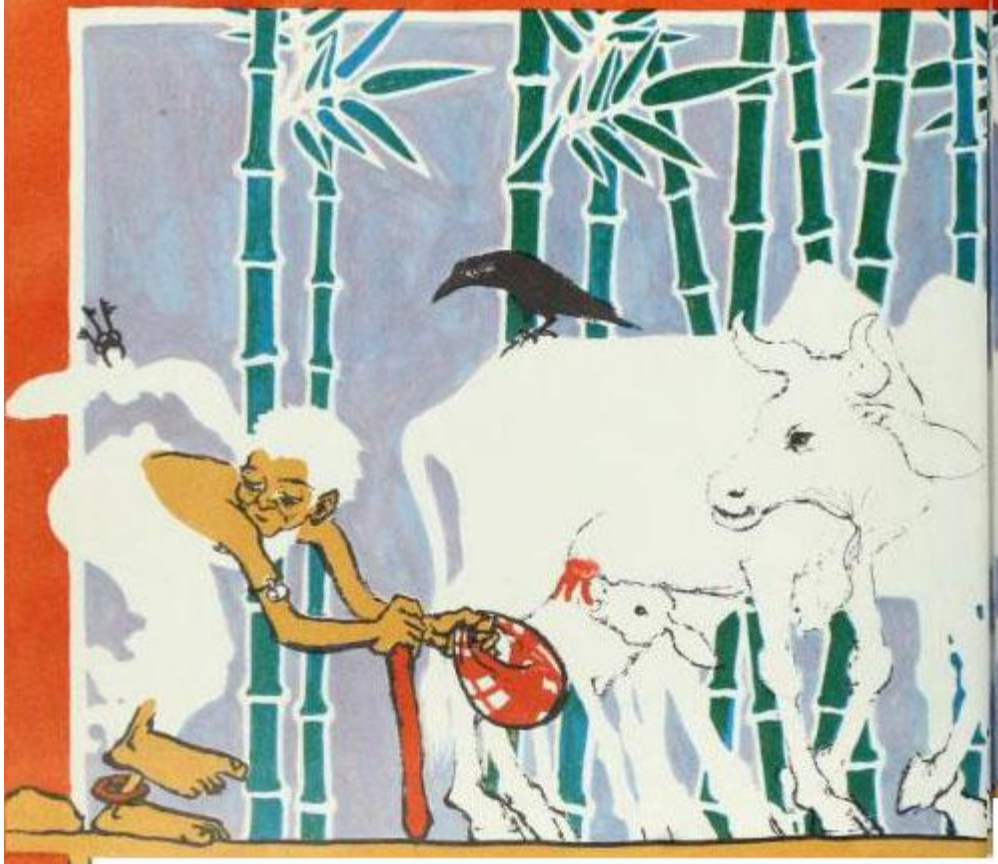

जैसे-जैसे वह आगे चली, उसे सड़क पर कुछ गोबर पड़ा हुआ दिखा. जब बूढ़ी औरत उसके पास आई, तो गोबर ने उससे पूछा, "बुढ़िया, तुम कहाँ जा रही हो?"

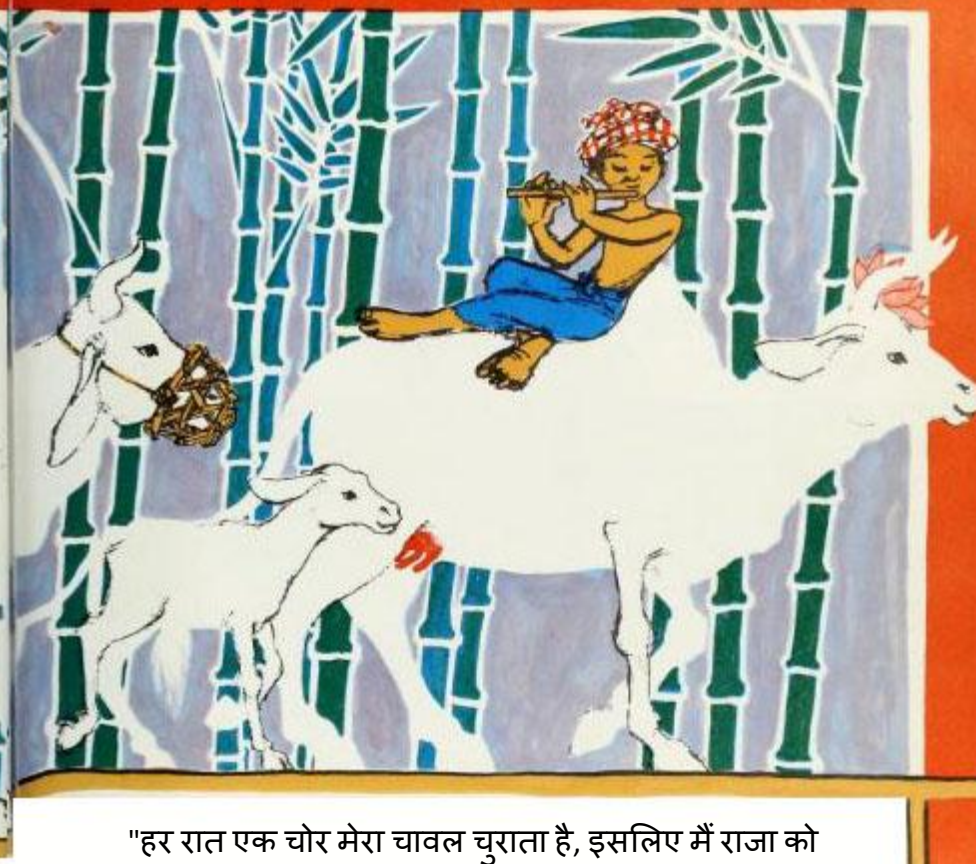

"हर रात एक चोर मेरा चावल चुराता है, इसलिए मैं राजा को बताने के लिए जा रही हूँ."
"वापिस लौटते समय तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊंगा."
"अच्छा!" बुढ़िया ने कहा.

राजा के महल में पहुँचने से ठीक पहले, बुढ़िया को नदी में एक मगरमच्छ दिखाई दिया.

मगरमच्छ ने पूछा, "बुढ़िया, तुम कहाँ जा रही हो?"

"हर रात एक चोर मेरे चावल खाता है, और मैं राजा से शिकायत करने जा रही हूं."

मगरमच्छ ने कहा, "वापिस लौटते समय तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं ज़रूर तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊंगा."

"अच्छा!" बुढ़िया ने कहा.

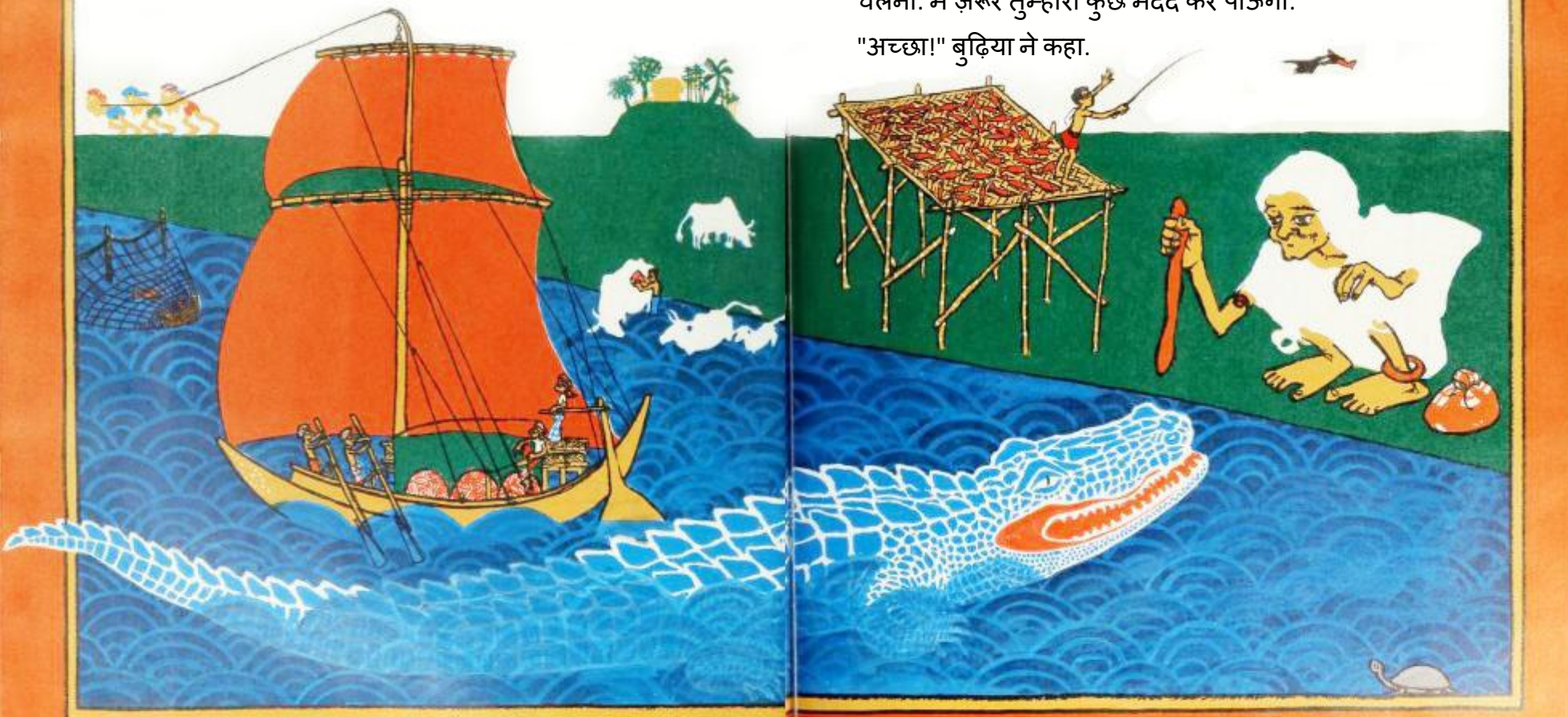

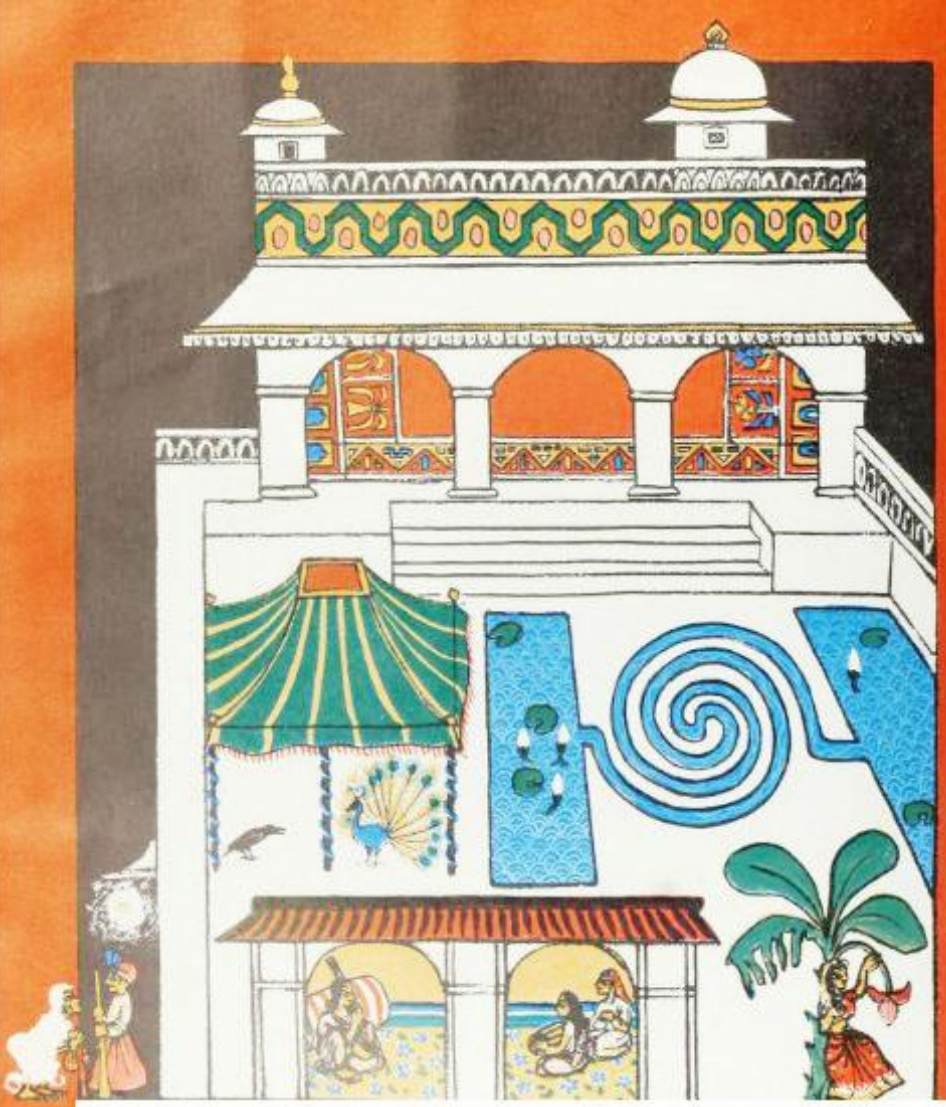

जब वह राजा के महल मे पहुंची, तो उसने पाया कि राजा बाघों का शिकार करने गया था और अगले दिन ही वापस आने वाला था.

अपने घर जाते समय बुढ़िया ने मगरमच्छ, गोबर, उस्तरा, बेल और बिच्छू-मछली को उठाकर उन्हें अपने बोरे में डाल लिया.

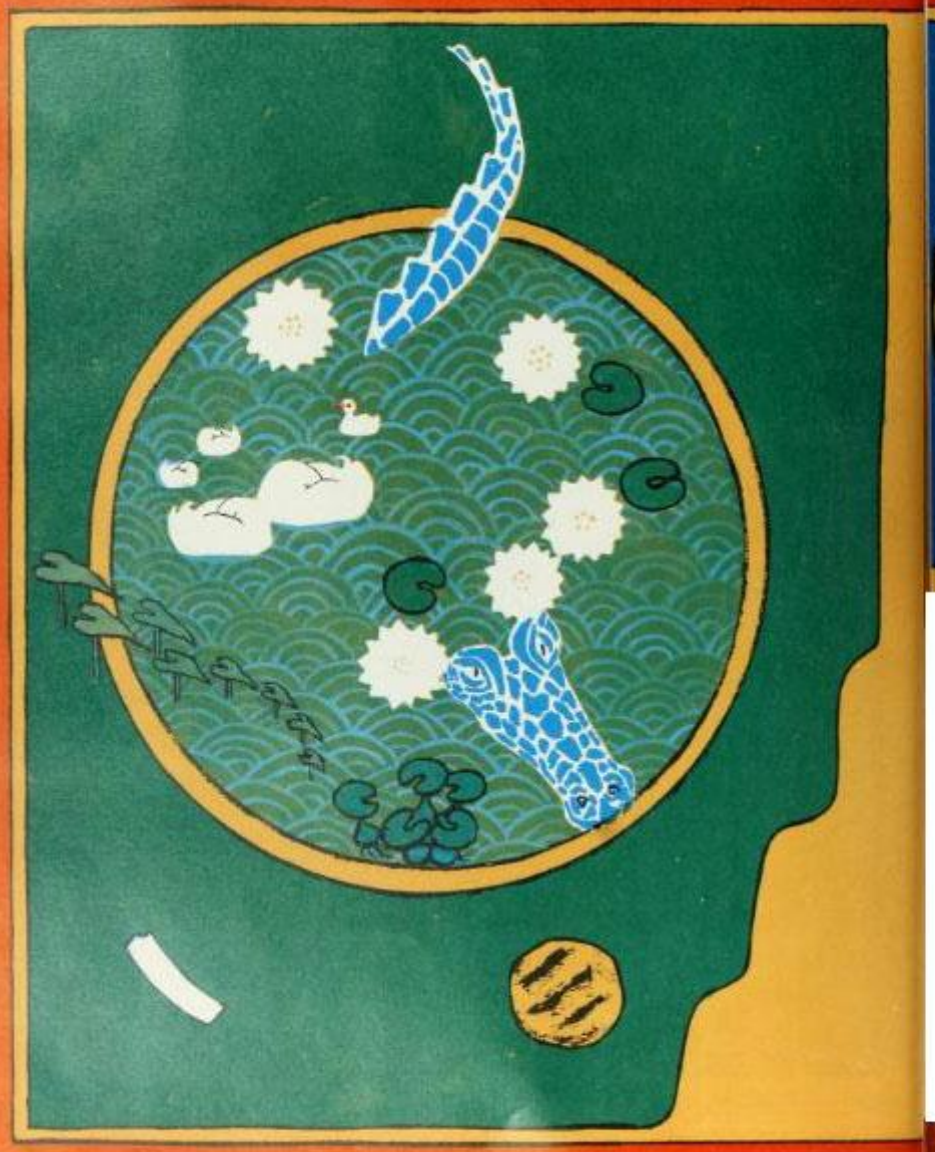

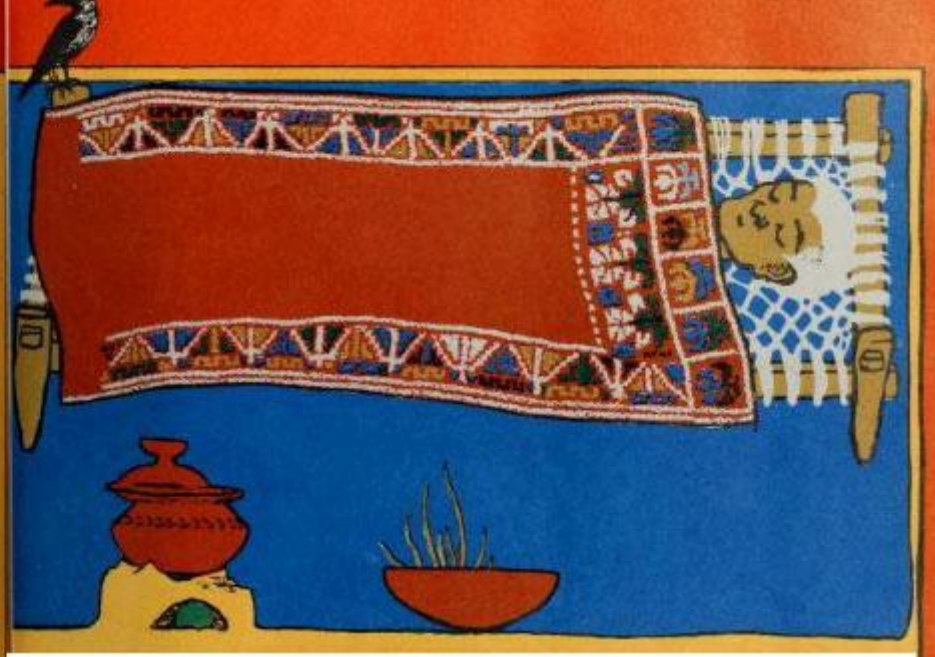

जब वे उसके घर आए, तो मगरमच्छ ने कहा, "तुम मुझे अपने तालाब में छोड़ दो."

गोबर ने कहा, "मुझे सीढ़ियों के नीचे रखो."

उस्तरा बोला, "मुझे गोबर के पास घास में डाल दो."

बेल ने कहा, "मुझे चूल्हे के ऊपर रख दो."

बिच्छू-मछली ने कहा, "मुझे चावल उबालने वाले भगोने में रख दो."

उसके बाद बूढ़ी औरत को मुरमुरा खाया और उन सभी से शुभरात्रि कह कर वो बिस्तर में सोने चली गई.

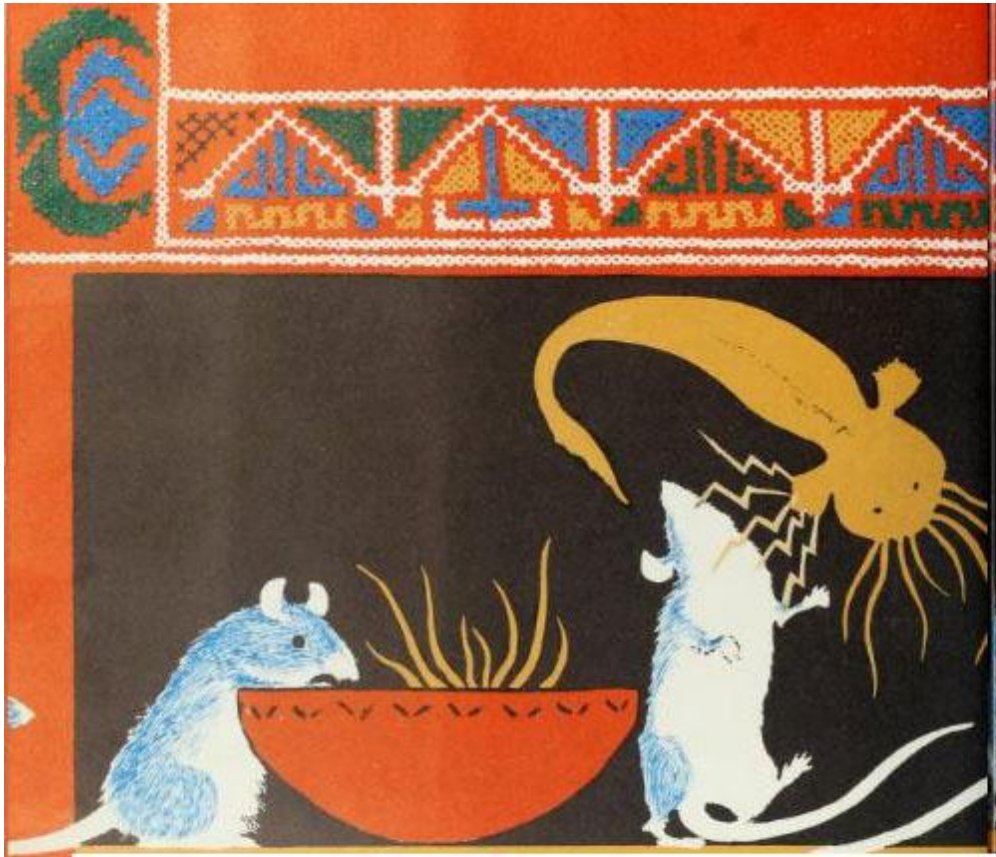

आधी रात को चोर आया. वह अंदर घुसा और कुछ उबले हुए चावल को चुराने के लिए भगोने के पास गया. अंदर बिच्छू-मछली थी! उसने चोर को इतनी ज़ोर से डंक मारा कि वो दर्द से उछलकर नीचे गिर गया.

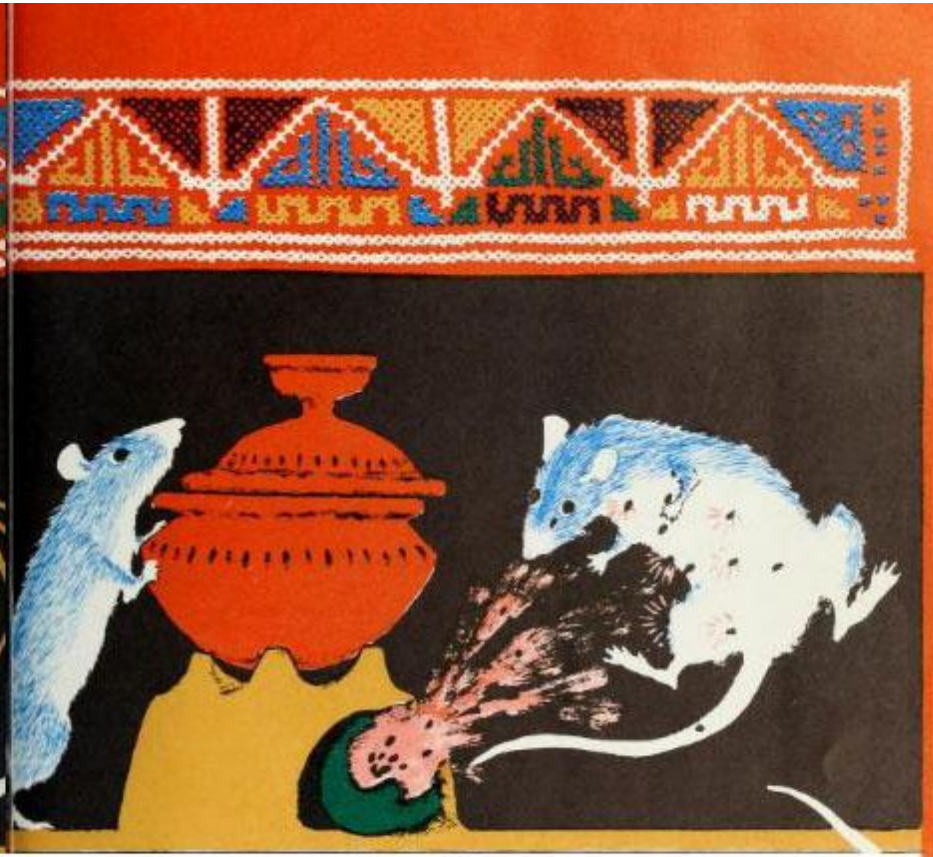

फिर चोर कुछ मुरमुरा चुराने के लिए चूल्हे पर गया. जब उसने बर्तन को छुआ, तो बेल का फट गया! बेल के गर्म बीज गोलियों जैसे चोर के शरीर में लगे और उसके होश उड़ गए. चोर बाहर आकर धराशायी हो गया.

लेकिन अंधेरे में चोर गोबर पर फिसल गया और फिर उस्तरे के ऊपर धम्म करके बैठा. फिर चोर चिल्लाता हुआ खुद को धोने के लिए तालाब की तरफ भागा.

जैसे ही उसने पानी में पैर रखा, मगरमच्छ ने उसे काट लिया. "अरे! बाप रे!" वो दर्द से चिल्लाया.

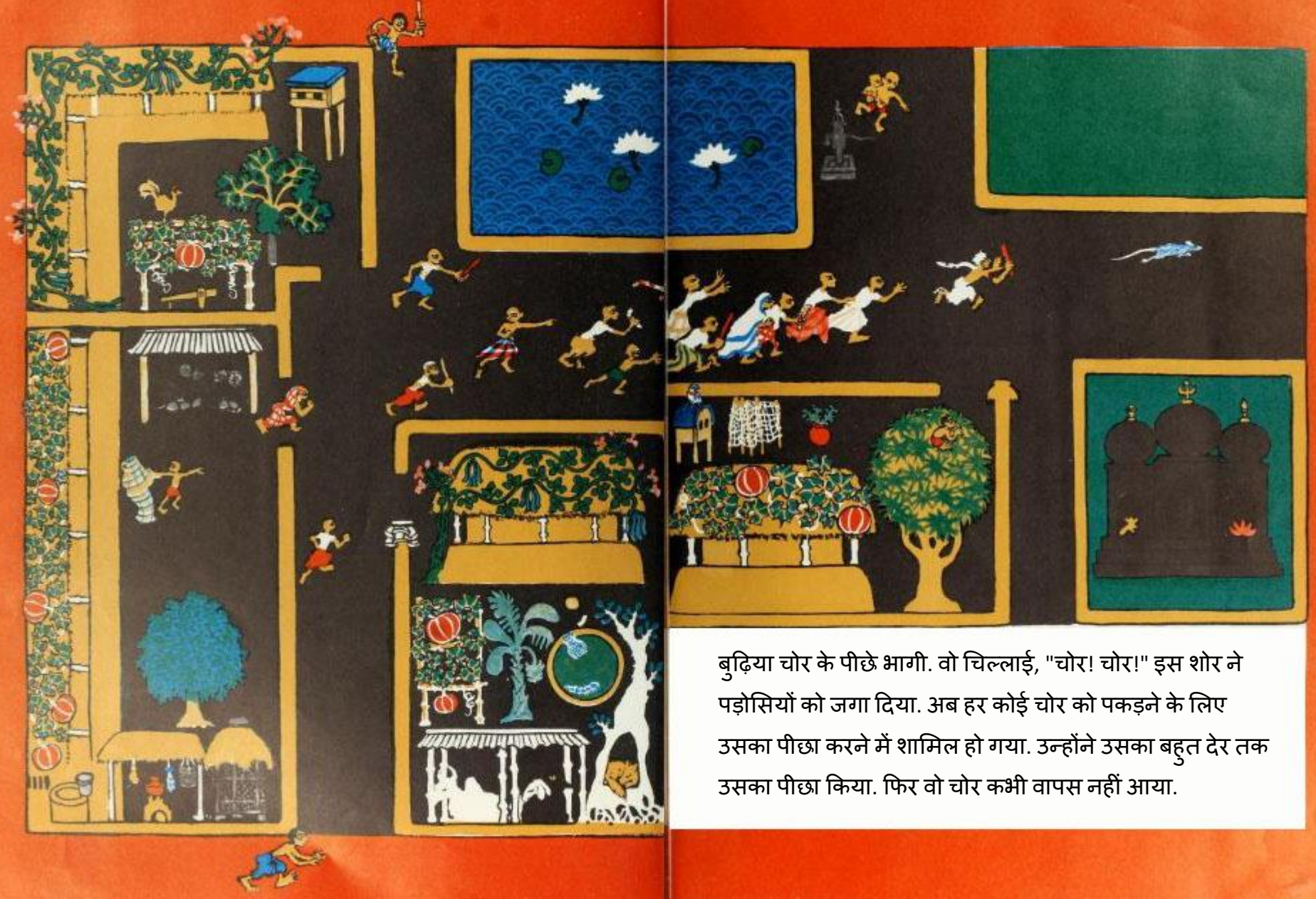

बुढ़िया चोर के पीछे भागी. वो चिल्लाई, "चोर! चोर!" इस शोर ने पड़ोसियों को जगा दिया. अब हर कोई चोर को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने में शामिल हो गया. उन्होंने उसका बहुत देर तक उसका पीछा किया. फिर वो चोर कभी वापस नहीं आया.

उसके बाद बूढ़ी औरत के पास हमेशा भगोने में उबला हुआ चावल और और मुरमुरा खाने को होता था.

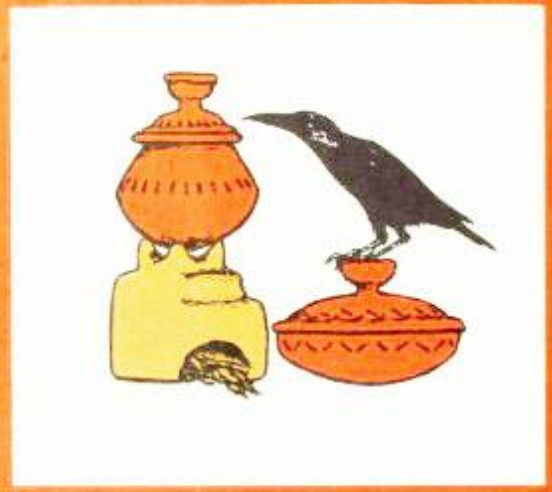

समाप्त